६/११ कौन सी और क्यों : १६०६ या २००१
सत्याग्रह जन्मदिवस कार्यक्रम
सितम्बर ११, २००५, नई दिल्ली

वक्तव्य

सुश्री. निर्मला देशपाण्डे जी

प्रो. रिनपोछे साहब, प्रो. सैयद हामिद साहब, प्रो. मौलाना साहब, शांति सैनिकों, बुजुर्गों और साथियों आज बहुत ही अच्दा कदम हम सभी ने मिलकर उठाया है । भाई राजीव वोरा और उनके साथियों ने दो-तीन मास में जो मेहनत की है यह उसका ही नतीजा है कि आज शांति की प्रतिज्ञा और वह भी सैयद हामिद साहब ने आपको दिलवाई, इससे बढ़कर खुशी का मौका और क्या हो सकता है । आज के दिन मैं आपको और याद दिलाऊं आज महात्मा गांधी के रूहानी जहांनशीर आचार्य विनोबा भावे का जन्मदिवस है । वो आज होते तो ११० साल के होते । उन्होंने गरीबों के लिए जमीन मांगते हुए ८०,००० km. की पदयात्रा पूरे हिन्दुस्तान में की । मेरा ख्याल है ऐसा कोई जिला, कस्बा और गाँव नहीं होगा जहां वे न पहुँचे हों इसलिए आज के दिन हम उनको भी याद करें । वह कहते थे शांति सेना के सबसे पहले सदस्य महात्मा गांधी थे और सबसे पहले सिपाही भी महात्मा गांधी ही थे । गांधीजी ने कहा था कि अगर खून बहना हो तो वह मेरा बहे और हिन्दू-मुसलमान एकता के लिए बहे और ठीक यही हुआ । हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को जोड़ने के लिए उन्होंने अपनी कुर्बानी दी ।

आज हम सत्याग्रह के १०० साल के मुबारक मौके पर इकटठे हुए हैं और इसी दिन एक बहुत ही बुरा हादसा भी हुआ था अमेरिका में । कहीं भी इन्सान का खून बहता है तो वह दुख की बात है, लेकिन यह भी सोचने की बात है कि ये सब क्यों होता है ? ये भी सोचने की जरूरत है कि इसका मुकाबला कैसे किया जाय ? समाज में नाइन्साफी है, गुट हैं, बेरोजगारी है और क्या-क्या नहीं है । इस सबका मुकाबला करके एक अच्छा समाज कैसे बनाया जाये इसकी खोज में तमाम सारी दुनिया लगी हुई है और उसी खोज में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की खोज की । १०० साल पहले का ये सत्याग्रह का जो तरीका है ये अमन अदम तशदुद से लड़ाई लड़ने का तरीका है, बहुत अनोखा है । आज तक तारीख में कभी ऐसा देखा नहीं गया था लेकिन गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में ये लड़ाई लड़ी, कामयाबी हासिल की और दुनिया ने एक करिश्मा देख लिया ।

मैं आपको बताना चाहती हूँ कि उनके बाद अदम तशदुद का, शांति का और अहिंसा का एक और बहुत बड़ा काम हुआ । आपने जो बिल्ला लगाया हुआ है उसमें आप उनकी तस्वीर

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org

देखेगें, वह हैं दूसरे गांधी बादशाह अब्दुल गफ्फार खां जिन्हें सरहदी गांधी कहा जाता है । उनकी एक बहुत अच्छी किताब हाल ही में मेरे पास आई थी जो अमेरिका में प्रकाशित हुई है ‘Nonviolent soldier of The Islam’ । इस्लाम का वह अगम सिपाही जो अदम तशदुद से लड़ा वो थे बादशाह खां साहब और उन पर इतनी बेहतरीन किताब मैंने पहले नहीं देखी । अमेरिका के बहुत सारे अखबारों ने लिखा है कि ये किताब पढ़ने से पता चलता है कि इस्लाम क्या है और हम इस्लाम को कितना गलत समझते थे । यही इस्लाम के बारे में जब बादशाह खांन से किसी ने पूछा कि आपने ये अदम तशदुद और सत्याग्रह किससे सीखा, गांधीजी से ? उन्होंने कहा मैंने गांधीजी से बहुत कुछ सीखा है लेकिन अदम तशदुद का सबक मैंने सीखा है कुरान शरीफ से । उन्होंने जगह-जगह कोट में लिखा है कि जगह-जगह मैंने कुरान शरीफ में क्या पाया, क्या सीखा और कैसे उसे अपनाया । वह किताब तो मैं सैयद हामिद साहब से गुजारिश करूंगी कि जरूर उर्दू में उसका तर्जुमा करायें और हर एक के पास पहुँचे । इस किताब पर इतने बेहतरीन Comments आये हैं जो हमें किताब पढ़ने से पता चला कि ११ सितम्बर का जो हादसा हुआ था उससे हमने इस्लाम के बारे में कैसा गलत ख्याल बना लिया था । यह किताब पढ़ने पर पता चलता है कि वास्तव में इस्लाम क्या चाहता है । अमन, अदम तशदुद, प्यार-मोहब्बत, भाईचारा चाहता है और मैं आपसे यह कहना चाहती हूँ कि हम-सभी को मिलकर के भाई-चारे का काम आगे बढ़ाना है ।

जवाहरलाल युनिवर्सिटी के प्रोफेसर मोहम्मद हाशिम कुरैशी साहब,यहाँ पर मौजूद हैं । उन्होंने इस तरख अदम तशदुद व इस्लाम पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जो तकरीरें की हैं तथा गांधीजी पर और विनोबाजी पर जो कहा है सुनने वाले दंग रह जाते हैं । खुशकिस्मति की बात है कि आज वो यहाँ पर मौजूद हैं इसलिए मैं ज्यादा नहीं बताऊँगी और मैं चाहूँगी कि वो ही आपको सम्बोधित करें । इसके बारे में इतना ही कहना चाहती हूँ कि अब बहुत सारे फ्रंटियर के और करांची और लाहौर के दोस्त भी आकर कहते हैं कि हम बादशाह खांन को फिर से याद करने लगे हैं । बादशाह खांन ने क्या करिश्मा करके दिखाया । आज तो हम यहां ५०-६० थे लेकिन बादशाह खांन ने उस समय एक लांख शान्ति सैनिकों की फौज खड़ी की थी और जिन्होंने अंग्रेजों की संगीनों का मुकाबला किया था । मैं एक ही घटना सुनाती हूँ जिसमें कि अग्रेजी हकूमत थर्रा गई थी । लेकिन बंदूकों, तोपों और फौजों से नहीं बल्कि वो थे शांति सेना के सिपाही जो बादशाह खांन ने तैयार किये थे । पठान जिनके बारे में कहा जाता था कि जरा-जरा सी बात पर मरने मारने को तैयार हो जाते थे वो पठानों की फौज अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ झंडा लेकर निकली और जुलूस निकालने लगी । अंग्रेज अफसर ने गोली चलाने का हुकूम दिया और धड़ा-धड़ गोलियों की बौछार होने लगी, लोग मरने लगे, जिसके हाथ में झण्डा था वो गिर गया फिर पीछे वाला आ गया तो उसने झण्डा थाम लिया, थोड़ा आगे बढ़ा वह भी गिर गया, गोलियां चल रही थीं लोग आगे बढ़ रहे थे । वो पठान जो जरा सी बात पर बदूंक चला देते थे वो मरते जा रहे थे । जब तीन सौ शांति सैनिक मर गये तो उस अंग्रेज अफसर ने कहा Stop बन्द करो, मैं इनसे नहीं लड़ सकता हूँ, इनके सामने मेरी

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org

बंदूक कुछ काम नहीं कर सकती । सुना है कि उसने लंदन को भी लिख दिया था कि अब अंग्रेज इस मुल्क पर हकूमत नहीं कर सकते क्योंकि यहाँ पर ऐसे सिपाही मौजूद हैं जो मरना जानते हैं, मारना नहीं । ये हिन्दुस्तान की तारीख का एक ऐसा पन्ना है जिसको सुनकर और देखकर हर किसी को फक्र महसूस होता है कि ऐसे हमारे पुर्खे थे । मै चाहूँगी कि यह सब बातें आपके सामने पेश हों ।

मै आपका ज्यादा वक्त नहीं लूँगी मेरे पास मेरी कुछ अपनी मजबूरियां हैं । मेरे पास मेरे कश्मीर के कुछ खास लोग आ रहे हैं । अच्छी बातचीत करने के लिए हम लोग कोशिश में लगे हैं कि हिन्दुस्तान में भाईचारा बना रहे, हमारी सारी जो विरासत है जो गंगा-जमुनी तहजीब है ये बनी रहे और इसमें सब प्रकार से शान्ति हो । हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच दोस्ती हो, रिश्ते सुधरें और हम सब मिलजुलकर रहें इसी काम में हम लगे हुए हैं । उसी काम को थोड़ा आगे बढ़ाने के लिए एक बैठक हो रही है, इसलिए मैं मांफी चाहती हूँ कि मुझे जाना पड़ेगा । आप सबको बहुत-बहुत मुबारक । आखिरी में मेरे गुरू विनोबा भावे ने जो नारा दिया था 'जय जगत' उसके बारे में बताती हूँ । वह कहते थे कि अब जय हिंन्द का जमाना बीत गया । अब सिर्फ हिन्तुस्तान की जय नहीं बोलनी है, बल्कि अब हर मुल्क की, दुनियाँ की जय बोलनी है और जय जगत कह दिया तो दुनियाँ की जय बोल दिया । इस तरह से हिन्दुस्तान की भी जय हो गयी, पाकिस्तान की भी हो गयी, चीन की भी हो गयी, रूस की भी हो गयी सबकी जय हो गयी । मैंने जय जगत का नारा पहली बार पाकिस्तान में लगाया तो लोग इससे बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा कि हमने कभी ऐसा नहीं सुना था । एक साथ सब की जय तो मैं वही कह कर विदा लूँगी जय जगत, आदाब, सलाम, नमस्कार ।

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org